| | | | |
|---|---|---|---|
| दमः, [1]दमी, | [2]बलिन्दमः[A], अरिन्दमः[B], दमः, | [3]कुलदमनः, [C]सर्वदमनः, | दिदमिषुः, दन्दमः; |
| दमितव्यम्, | दमयितव्यम्, | दिदमिषितव्यम्, | दन्दमितव्यम्; |
| दमनीयम्-[4]दमनीया, | दमनीयम्, | दिदमिषणीयम्, | दन्दमनीयम्; |
| [5]दम्यम्, | दम्यम्, | दिदमिष्यम्, | दन्दम्यम्; |
| ईषद्दमः-[D]दुर्दमः-सुदमः; | | — | — |
| दम्यमानः, | दम्यमानः, | दिदमिष्यमाणः, | दन्दम्यमानः; |
| दमः, | दमः, | दिदमिषः, | दन्दमः; |
| दमितुम्, | दमयितुम्, | दिदमिषितुम्, | दन्दमितुम्; |
| दान्तिः, | दमना, | दिदमिषा, | दन्दमा; |
| दमनम्, | दमनम्, | दिदमिषणम्, | दन्दमनम्; |
| [6]दमित्वा[E]-दान्त्वा, | दमयित्वा, | दिदमिषित्वा, | दन्दमित्वा; |
| प्रदम्य, | [7]प्रदमय्य, | प्रदिदमिष्य, | प्रदन्दम्य; |

1. 'शमित्यष्टाभ्यो घिनुण्' (3-2-141) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु घिनुण्।
2. 'संज्ञायां भृतॄवृजिधारिसहितपिदमः' (3-2-46) इति कर्तरि संज्ञायां खच्। खित्त्वात् मुम्। बलिं दाम्यतीति **बलिन्दमः**=विष्णुः। 'मतान्तरे तु अन्तर्भावितण्यर्थोऽत्र **दमिः**' इति **सि. कौमुदी**। तदानीं बलिं दमयतीति **बलिन्दमः** इति सकर्मकः।
3. नन्द्यादिषु (3-1-134) पाठात् ण्यन्तादस्मात् कर्तरि ल्युः। कुलं दमयतीति **कुलदमनः**। **शत्रुदमनः** इत्यादिष्वप्येवमेव ज्ञेयम्।
4. 'कृत्यल्युटो बहुलम्' (3-3-113) इति बाहुलकात् कर्तरि अनीयर्। **दमनीया**=योषित्। दमनकर्त्री इत्यर्थः। इति **प्र. सर्वस्वे**।
5. 'पोरदुपधात्' (3-1-98) इति भावे यत्प्रत्ययः। ण्यदपवादः।
6. '**उदितो** वा' (7-2-56) इति क्त्वायामिड्विकल्पः। तेन रूपद्वयम्।
7. 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (6-4-56) इति णेरयादेशः।

A. 'ततो **बलिन्दम**प्रख्यं कपिर्विश्वम्भराधिपम्।' भ. का. 6.108.

B. 'शत्रुंसहः कोऽपि वसुन्धरा च शत्रुन्तपोऽरिन्दम एवमूह्यम्॥' प्र. स.

C. 'इहायं सत्त्वानां प्रसभदमनात् **सर्वदमनः**...॥' शाकुन्तले 7.33.

D. 'अवाक्शिरसमुत्पादं कृतान्तेनापि **दुर्दमम्**।' भ. का. 4.3.

E. '**दमित्वा**ऽप्यरिसंघातानश्रान्त्वा कपिकेसरी।' भ. का. 9.42.